International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

वैश्वीकरण का हिंदी भाषा और साहित्य पर प्रभाव

डॉ. मंजू भट्ट

सहायक प्राध्यापक (हिन्दी विभाग)
डॉ .सी. व्ही. रमन यूनिवर्सिटी बिलासपुर छत्तीसगढ़

सारांश

वर्तमान समय को वैश्वीकरण का युग कहा जाता है। संचार माध्यमों की क्रांतिकारी प्रगति, बहुराष्ट्रीय कंपनियों का विस्तार, इंटरनेट का प्रसार, आर्थिक उदारीकरण, मुक्त बाज़ार की नीतियाँ तथा अंतरराष्ट्रीय सहयोगकृइन सभी ने विश्व को एक "ग्लोबल विलेज" के रूप में परिवर्तित कर दिया है। भाषा और साहित्य मानव संस्कृति के संवाहक होते हैं, इसलिए वे इन परिवर्तनों से अछूते नहीं रह सकते। हिंदी भाषा, जो भारत की सबसे बड़ी और विश्व की प्रमुख भाषाओं में शामिल है, वैश्वीकरण के प्रभाव से नई संभावनाएँ, व्यापकता और चुनौतियों का अनुभव कर रही है। हिंदी साहित्य भी आधुनिक परिस्थितियों के अनुसार अपने रूप, विषय, संवेदना और अभिव्यक्ति में महत्वपूर्ण परिवर्तन देख रहा है। वैश्वीकरण ने हिंदी को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दी है। भारत की आर्थिक प्रगति, विदेशों में बसे भारतीयों की बढ़ती संख्या तथा बॉलीवुड, टीवी सीरियल, ओटीटी प्लेटफॉर्म और सोशल मीडिया ने हिंदी को विश्वभर में लोकप्रिय भाषा बना दिया है। वैश्वीकरण ने तकनीकी प्रगति को बढ़ावा दिया, जिससे हिंदी ने इंटरनेट, वेबसाइट, डाउनलोड, ईमेल, सॉफ्टवेयर, मार्केटिंग आदि जैसे शब्द सहजता से स्वीकार किए। वैश्विक रोजगार और शिक्षा अंग्रेज़ी प्रधान होने के कारण हिंदी में अंग्रेज़ी मिश्रण बढ़ा है। इससे भाषा आधुनिक तो लगती है, लेकिन इसकी शुद्धता प्रभावित होती है।

मुख्य शब्द: उदारीकरण, वैश्वीकरण, व्यापकता, सोशल मीडिया, चुनौतियां, आधुनिकीकरण

प्रस्तावना

वैश्वीकरण और हिंदी साहित्य पर प्रभाव एवं प्रवासी जीवन, वैश्विक पहचान, उपभोक्तावाद, माइग्रेशन, डिजिटल समाज आदि विषय साहित्य में प्रमुखता से उभर रहे हैं। ब्लॉग, ईदृपुस्तक, ऑडियोबुक, डिजिटल लाइब्रेरी और ऑनलाइन पत्रिकाओं ने साहित्य को वैश्विक पहुँच दी है। हिंदी से अन्य भाषाओं में और अन्य भाषाओं से हिंदी में अनुवाद ने साहित्यिक जगत का दायरा बढ़ाया है। साहित्य अधिक विश्वनागरिक हुआ है, पर पारंपरिक भारतीय संस्कृति और जड़ों का प्रतिनिधित्व अपेक्षाकृत कम हुआ है। वैश्वीकरण के कारण हिंदी भाषा और साहित्य में अवसर और चुनौतियाँ दोनों बढ़ी हैं। यदि हम संतुलन और संरक्षण के साथ आगे बढ़ें तो हिंदी भविष्य में और अधिक शक्तिशाली, प्रभावी और विश्वव्यापी भाषा बन सकती है। 21वीं सदी सूचना–प्रौद्योगिकी, मुक्त बाजार और अंतरराष्ट्रीय आदान–प्रदान की सदी है। विश्व एक "ग्लोबल विलेज" के रूप में सामने आया है। ऐसे समय में भाषा और साहित्य भी इससे अछूते नहीं रह सकते। हिंदी भाषा, जो करोड़ों लोगों की मातृभाषा है, वैश्वीकरण के प्रभाव से नई चुनौतियों और नए अवसरों का सामना कर रही है।वैश्वीकरण ने भारत को अंतरराष्ट्रीय मंचों पर प्रमुख स्थान दिया है। इसके साथ ही हिंदी फिल्में, टीवी, संगीत और सोशल मीडिया ने हिंदी को विश्वभर में लोकप्रिय बना दिया है।आईटी, विज्ञान, मार्केटिंग, बैंकिंग आदि नए क्षेत्रों के लिए हिंदी में नई शब्दावली विकसित हुईकृजैसे डाउनलोड, ऑनलाइन, लॉगिन, बुकिंग आदि। इससे हिंदी की अभिव्यक्ति–क्षमता बढ़ी।लोग अब हिंदी के साथ अंग्रेज़ी और अन्य भाषाएँ भी सीख रहे हैं। इससे भाषा उपयोग का दायरा विस्तृत हुआ है।अनुवाद, ई–बुक, वेब–सीरियल और ब्लॉगिंग के माध्यम से हिंदी साहित्य विश्वस्तर पर पढ़ा जाने लगा है।शिक्षण, व्यापार, तकनीक और नौकरी के क्षेत्र में अंग्रेज़ी का अत्यधिक उपयोग हिंदी की स्थिति को चुनौती देता है।हिंग्लिश का प्रचलन भी शुद्ध भाषा के लिए खतरा माना जा रहा है।अनावश्यक अंग्रेज़ी शब्दों का प्रयोग बढ़ रहा हैकृजैसे मीटिंग, प्रेज़ेंटेशन, रिपोर्ट मैनेजमेंट कृ जिससे हिंदी की मौलिकता प्रभावित होती है।बाजार और मीडिया केंद्रित वैश्वीकरण में पहाड़ी, बुंदेलखंडी, भोजपुरी, मारवाड़ी, मैथिली, अवधी जैसी लोक–बोलियाँ पीछे छूटती जा रही हैं।भाषा और साहित्य में भी बाज़ारवाद, विज्ञापन–संस्कृति और उपभोग–मूल्यों की अभिव्यक्ति बढ़ी है, जो पारंपरिक संवेदनाओं को प्रभावित करती है।अब साहित्य में बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ, प्रवासी जीवन, डिजिटल दुनिया, माइग्रेशन, पहचान–संकट, पूँजीवाद आदि विषय शामिल हो रहे हैं।ब्लॉग, वेब साहित्य, ई–लाइब्रेरी, ऑनलाइन पत्रिकाएँकृइनसे नए लेखकों को मंच मिला।हिंदी साहित्य के रचनाकार विश्व की विविध भाषाओं में अनूदित हो रहे हैं, जिससे

हिंदी की प्रतिष्ठा बढ़ी है।ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म ने युवा, महिला और ग्रामीण लेखकों को भी प्रकाशन और पाठकों तक पहुँचने का अवसर दिया है।

हिंदी भाषा का वैश्विक विस्तार

वैश्वीकरण ने हिंदी को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दी है। भारत की आर्थिक प्रगति, विदेशों में बसे भारतीयों की बढ़ती संख्या तथा बॉलीवुड, टीवी सीरियल, ओटीटी प्लेटफॉर्म और सोशल मीडिया ने हिंदी को विश्वभर में लोकप्रिय भाषा बना दिया है।तकनीकी और वैज्ञानिक शब्दावली का विस्तार —वैश्वीकरण ने तकनीकी प्रगति को बढ़ावा दिया, जिससे हिंदी ने इंटरनेट, वेबसाइट, डाउनलोड, ईमेल, सॉफ्टवेयर, मार्केटिंग आदि जैसे शब्द सहजता से स्वीकार किए।हिंदी में अंग्रेज़ी का बढ़ता प्रभाव (हिंग्लिश का उदय) वैश्विक रोजगार और शिक्षा अंग्रेज़ी प्रधान होने के कारण हिंदी में अंग्रेज़ी मिश्रण बढ़ा है। इससे भाषा आधुनिक तो लगती है, लेकिन इसकी शुद्धता प्रभावित होती है। शब्द—दूषण और भाषा—संकरता अनावश्यक अंग्रेज़ी प्रयोग जैसे डिस्कशन, इश्यू, मैनेजमेंट आदि हिंदी की मौलिकता को कम करते हैं। क्षेत्रीय बोलियों पर प्रभाव अवधी, ब्रज, भोजपुरी, पहाड़ी आदि बोलियाँ मीडिया और बाजार के दबाव में हाशिये पर जा रही हैं। प्रौद्योगिकी से भाषा—शैली में परिवर्तन मोबाइल और सोशल मीडिया ने संक्षिप्त लेखन, रोमानी हिंदी, इमोजी आधारित संवाद को बढ़ावा दिया है।

वैश्वीकरण और हिंदी साहित्य पर प्रभाव

साहित्य के विषयों में विस्तार प्रवासी जीवन, वैश्विक पहचान, उपभोक्तावाद, माइग्रेशन, डिजिटल समाज आदि विषय साहित्य में प्रमुखता से उभर रहे हैं। साहित्य के नए माध्यम ब्लॉग, ईदृपुस्तक, ऑडियोबुक, डिजिटल लाइब्रेरी और ऑनलाइन पत्रिकाओं ने साहित्य को वैश्विक पहुँच दी है। . अनुवाद साहित्य का विस्तार हिंदी से अन्य भाषाओं में और अन्य भाषाओं से हिंदी में अनुवाद ने साहित्यिक जगत का दायरा बढ़ाया है। बाज़ारवाद का प्रभाव प्रकाशक अब मनोरंजन प्रधान साहित्य को प्राथमिकता देते हैं। इससे गंभीर साहित्य और शोधपरक रचनाएँ प्रभावित होती हैं। पाठकीयता में कमी डिजिटल मनोरंजन के कारण लंबा साहित्य पढ़ने की प्रवृत्ति कम हुई है।. साहित्यिक संवेदना में परिवर्तन साहित्य अधिक विश्वनागरिक हुआ है, पर पारंपरिक भारतीय संस्कृति और जड़ों का प्रतिनिधित्व अपेक्षाकृत कम हुआ है।

उपसंहार

वैश्वीकरण ने हिंदी भाषा और साहित्य को नए अवसर दिए हैं। हिंदी आज विश्वस्तरीय मंच पर पहले से कही अधिक मजबूत उपस्थिति दर्ज कर रही है। साहित्य में नए विषय, नए माध्यम और नई अभिव्यक्तियाँ उभर रही हैं।परंतु साथ ही भाषा की शुद्धता, बोलियों का अस्तित्व, सांस्कृतिक पहचान और साहित्यिक मूल्यों के सामने नए खतरे भी खड़े हुए हैं।अतः आवश्यक है कि हम आधुनिकता और परंपरा, नवाचार और संरक्षण, वैश्विकता और भारतीयताकृइन सभी के बीच उचित संतुलन बनाए रखें। इसी संतुलन से हिंदी भाषा और साहित्य वैश्विक युग में और अधिक सशक्त, समृद्ध और प्रभावी बन सकते हैं।वैश्वीकरण ने हिंदी भाषा और साहित्य दोनों के लिए जिस प्रकार चुनौतियाँ प्रस्तुत की हैं, उसी प्रकार अवसरों के नए द्वार भी खोले हैं। यह हिंदी को विश्वस्तरीय बनाने का मौका देता है, पर साथ ही यह आवश्यक है कि हम अपनी भाषा की पहचान, संवेदना और मूल्यों को सुरक्षित रखें। संतुलन, संरक्षण और नवाचारकृइन तीन आधारों पर हिंदी वैश्विक युग में और अधिक सशक्त होकर उभर सकती है।

संदर्भ ग्रंथ

1. कमलजीत सिंह— वैश्वीकरण
2. डॉ,हरिमोहन —जनसंचार माध्यम और हिंदी
3. डॉ.अशोक तिवारी —हिंदी भाषा और उसका विकास
4. डा,येललुरे— हिंदी भाषा एवं साहित्य
5. सुधीर पचौरी, हिंदी का नया जन क्षेत्र
6. विजय कुमार मल्होत्रा, कंप्यूटर के भाषिक अनुप्रयोग
7. डॉ नितिन शर्मा हिंदी भाषा और वैश्वीकरण

8. डॉ रामविलास शर्मा हिंदी भाषा और संस्कृति
9. डॉ सत्येंद्र शर्मा वैश्वीकरण और हिंदी
10. डॉ नागेश्वर लाल भाषा तकनीकी और वैश्वीकरण
11. डॉ रमेश चंद्र शाह उत्तर आधुनिकता और हिंदी साहित्य
12. डॉ. प्रभाव कुमार सिंह वैश्वीकरण और हिंदी साहित्य